Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-283-287

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 283-287
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :

डॉ. शिवेन्द्र कुमार मौर्य

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. शिवेन्द्र कुमार मौर्य

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार.

जायसी कृत पद्मावत पर पुरुषोत्तम अग्रवाल की आलोचना दृष्टि

शोध सारांश : 'पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी' पुरुषोत्तम अग्रवाल की महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक है। इसका हिंदी संस्करण 2022 ईस्वी में राजकमल पेपर बैक से प्रकाशित हुआ। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने इस पुस्तक में पद्मावत को लेकर नई उधेड़बुन की है। उनकी दृष्टि में पद्मावत 'कामेच्छा के अन्वेषण' का काव्य है। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने जायसी की इस दृष्टि को विकसित किया है।उनकी यह दृष्टि पद्मावत को पढ़ने और उस पर विचार करने की नई दृष्टि देती है। इस शोध–पत्र में पद्मावत पर पुरुषोत्तम अग्रवाल की आलोचना दृष्टि का सम्यक विश्लेषण किया जाएगा।

मुख्य शब्द : मानुस प्रेम,कामेच्छा, अन्वेषण, दंतकथा, काल्पनिक, ऐतिहासिक, नायिका प्रधान, अलौकिक सौंदर्य आदि।

'पद्मावत' हिन्दी साहित्य का प्रमुख आकर ग्रन्थ है। मलिक मुहम्मद जायसी के यश का आधार पद्मावत है। हिन्दी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षर पुरुषोत्तम अग्रवाल ने जायसी की अमर कृति 'पद्मावत' पर एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक लिखी, जिसका नाम 'पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी।' इसके पूर्व रामचन्द्र शुक्ल, वासुदेवशरण अग्रवाल, माता प्रसाद गुप्त, विजयदेव नारायण साही, परमानंद श्रीवास्तव, भवानीदत्त उप्रेती, मुज़ीब रिजवी आदि ने जायसी और पद्मावत पर बहुत कुछ लिखा-पढ़ा है। सबकी अपनी-अपनी स्थापनाएं हैं। उसी कड़ी में पुरुषोत्तम अग्रवाल आते हैं। पुरुषोत्तम अग्रवाल जायसी और पद्मावत को पढ़ने की एक नई देते दृष्टि हैं। हलांकि अपनी पुस्तक के निवेदन में वे अपने पूर्ववर्ती आलोचकों शुक्ल जी, डॉ. गुप्त, डॉ. अग्रवाल, विजयदेव नारायण साही, टामस ब्रूजन के कार्य का स्मरण करते हैं, किंतु उन्होंने मुजीब रिजवी के कार्य को विशेष महत्व दिया है। वे लिखते हैं– "जायसी के रचना संसार पर समग्रता में विचार करने वाला, अत्यन्त महत्वपूर्ण काम प्रो. मुजीब रिजवी का है, जो

उन्होंने पिछली सदी के आठवें दशक में किया था, लेकिन जो प्रकाशित उनके निधनोपरान्त 2019 में हुआ, सब लिखनी कै लिखु संसारा पद्‌मावत और जायसी की दुनिया शीर्षक से।"[1]

पुरुषोत्तम अग्रवाल की पुस्तक 'पद्‌मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी' 2022 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई। इसका अनुवाद परितोष मालवीय ने किया है। इसके पहले इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण 'पद्‌मावत एन एपिक लव स्टोरी' नाम से 2018 में रुपा प्रकाशन से प्रकाशित हो चुका था।जो पाठकों के बीच लोकप्रिय भी हुआ था। पुरुषोत्तम अग्रवाल की यह पुस्तक आम अवधारणा को बदलती है। पद्‌मावत को लेकर पाठकों में अभी तक आम अवधारणा थी कि यह अन्योक्ति या समासोक्ति, ऐतिहासिक या काल्पनिक, संयोग या वियोग, प्रेम या अध्यात्म, रहस्य या यथार्थ का काव्य है, किंतु पुरुषोत्तम अग्रवाल ने इसे 'कामेच्छा के अन्वेषण' का महाकाव्य कहा है। वे लिखते हैं– "जायसी का पद्‌मावत परम्परागत प्रेम, सामान्य कामेच्छा का एक महाकाव्य है, जो विशिष्टता एवं दिव्यता में रुपान्तरित होता है। जायसी का उद्‌देश्य सूफीमत का प्रसार अथवा राजपूत या हिन्दू गौरव का महिमामंडन नहीं, बल्कि उस प्रेम और कामेच्छा की व्याख्या है, जो मनुष्य को दिव्यता प्रदान करती है।"[2] अपनी इस बात को पूरी पुस्तक में वे कई बार दोहराते हैं। उनका यह मानना है कि जायसी ने सामान्य जनमानस से जो कहानी सुनी थी कामेच्छा के अन्वेषण हेतु उसका उन्होंने पुनर्निर्माण किया।

पुरुषोत्तम अग्रवाल को अपनी स्थापना की यह प्रेरणा पद्‌मावत के मण्डप गमन खण्ड की उस पंक्ति से मिलती है जिसमें जायसी लिखते हैं-

"मानुस पेम भएउ बैकुंठी।
नाहि त काह छार एक मूँठी।।"[3]

अर्थात् मनुष्य प्रेम द्वारा स्वर्ग के योग्य बना है, नहीं तो इसमें है क्या केवल एक मुट्‌ठी राख है। 'प्रेम मनुष्य को दिव्यता प्रदान करता है।' पुरुषोत्तम अग्रवाल ने इसी प्रेम की दिव्यता की पहचान की है। कबीर की भाँति वे भी काम को राम के मिलन में बाधा नहीं, बल्कि संवेदशील तरीका मानते हैं। काम ऐसा भाव है जो प्रत्येक जीव के भीतर समान रुप से व्याप्त है। मरणशील मनुष्य के लिए अध्यात्मिकता इसके माध्यम से साकार हो सकती है। उन्होंने कबीर की एक साखी का उद्धरण दिया है। 'काम मिलावे राम कूं, जो कोई जाने राषि। कबीर बिचारा क्या करे, जाकी सुखदेव बोले साषि।।' चूंकि कबीर जायसी से पहले पैदा हुए थे। कबीर ने आध्यात्मिकता की राह में स्वयं को बार-बार स्त्री रुप में प्रदर्शित भी किया है। पुरुषोत्तम अग्रवाल लिखते हैं– "जायसी से एक सदी पूर्व, कबीर ने काम भावना और आध्यात्मिकता की निरंतरता में अपने विश्वास की स्पष्ट घोषणा की थी। उन्होंने स्पष्ट रुप से कहा कि यदि काम भावना को अच्छे और संवेदनशील तरीके से समझा जाए तो यह मनुष्य को आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के पास इस परिवर्तनकारी अनुभव की निहित क्षमता होती है।"[4] पद्‌मावत के संबंध में पुरुषोत्तम अग्रवाल की यही धारणा है। वे लिखते हैं– जहाँ तक पद्‌मावत का सम्बन्ध है, इसमें वे किसी भी धार्मिकता से परे आध्यात्मिकता की शिक्षा देना चाह रहे हैं। यह आध्यात्मिकता मनुष्य के दैहिक प्रेम के विपरीत न होकर, उसी के माध्यम से साकार होती है और मरणशील मनुष्य को अमरत्व और दिव्यता प्रदान करती है।[5]

आचार्य शुक्ल ने स्वीकार किया है कि पद्‌मावत' एक प्रेम कहानी है। भारतीय परंपरा में चार प्रकार की प्रेम पद्धतियां मिलती हैं। आचार्य शुक्ल ने इन प्रेम की चारों अवस्थाओं का वर्णन किया है। पहला आदिकाव्य रामायण की प्रेम पद्धति, दूसरा अभिज्ञानशाकुन्तलम् और विक्रमोर्वशीयम् की प्रेम पद्धति, तीसरा रत्नावली, प्रियदर्शिका, कर्पूरमंजरी की प्रेम पद्धति और चौथा ऊषा-अनिरुद्ध की प्रेम पद्धति। उन्होंने पद्‌मावत को चौथे ढंग की प्रेम पद्धति माना है। चौथे ढंग की प्रेम पद्धति गुणश्रवण, चित्रदर्शन, स्वप्न दर्शन आदि से बैठे–बिठाए उत्पन्न होता है। "कहने की आवश्यकता नहीं कि जायसी ने 'पद्‌मावत' में जिस प्रेम का वर्णन किया है वह चौथे ढंग का है। पर इसमें वे कुछ

विशेषता भी लाए हैं। जायसी के श्रृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है। चुंबन, आलिंगन आदि का वर्णन कवि ने बहुत कम किया, केवल मन के उल्लास और वेदना कथन अधिक किया है। प्रयत्न नायक की ओर से है और उसकी कठिनता द्वारा कवि ने नायक के प्रेम को नापा है।"[6]

पद्मावत नायिका प्रधान महाकाव्य है। इसकी नायिका पद्मावती न तो पौराणिक है और न ही ऐतिहासिक, बल्कि वह काल्पनिक है। जायसी के पूर्व चित्तौड़ की पद्मिनी के बारे में जानने का एक मात्र साहित्यिक संदर्भ मिलता है। पंडित हरिहर निवास द्विवेदी और श्री अगरचन्द नाहटा ने 1960 ई0 में छिताईचरित का सम्पादन किया है। जायसी के समय प्रेमाख्यानों की अवधी परम्परा अपने शिखर पर थी। पद्मिनी मौखिक परम्पराओं में और राजस्थान की किंवदंतियों में पहले से उपस्थित थी जिसने जायसी को आकर्षित किया। हिन्दी प्रेमाख्यानकों की दो धाराएँ रही हैं। विशुद्ध भारतीय या हिन्दू प्रेमाख्यानक और दूसरी सूफी प्रेमाख्यानक। सूफी साधकों या कवियों ने भारतीय और अभारतीय दोनों पद्धतियों का मिश्रण कर दिया। इस प्रकार हिन्दी प्रेमाख्यानक साहित्य एक नए काव्यरुप में विकसित हुआ। जायसी नए काव्य रुप के सिरमौर कवि कहलाए। जायसी के पद्मावत के बाद पद्मिनी की गाथा को जानने के लिए दो प्रसिद्ध लिखित साहित्यिक संदर्भ उपलब्ध होते हैं। पहला हेमरतन कृत गोरा बादल री चौपाई (1588 ईस्वी) और दूसरा जटमल नाहर कृत गोरा बादल री बात (1627 ई.)। इन ग्रन्थों के अलावा पद्मावती पर विस्तार से जानने के लिए कुछ समय पहले (2017 ई0) आई ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल की पुस्तक 'रानी पद्मिनी चित्तौड़ का प्रथम जौहर' पुस्तक को देखा जा सकता है।

चित्तौड़ की रानी पद्मिनी तथ्य हैं या कल्पना यह बात अब इस पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात के मायने कुछ अलग हैं। पद्मिनी या पद्मावती अब एक खास वर्ग के लिए अस्मिता या पहचान बन चुकी है। पद्मिनी वीरता की वह गाथा है जो अपने जौहर के लिए याद की जाती रहेगी। सिंहलद्वीप की वास्तविकता या पद्मावती का सच अब इस बात पर निर्भर नहीं है कि ये दोनों वास्तविक हैं या साहित्यिक गल्प। जायसी ने सिंहलद्वीप और पद्मावती दोनों को अपनी लेखनी से अमर कर दिया। पुरुषोत्तम अग्रवाल सिंगल द्वीप और पद्मावती के सत्य का उद्घाटन करते हैं। उन्होंने लिखा है– सिंहलद्वीप वास्तविक भूगोल के बाहर है, और पद्मिनी समेत वहाँ के निवासी वास्तविक इतिहास के। रचना के लिए वास्तविक इतिहास और भूगोल भी मूल्यवान है, और वे सब भी जो इनके बाहर हैं।[7] जो भी हो जायसी ने इतिहास और कल्पना की फेंट इतनी गाढ़ी और पक्की कर दी है कि वह जनमानस के हृदय और दिलो-दिमाग पर सदियों तक छायी रहेगी। यह कहना ठीक ही होगा कि जायसी ने राजपुताना की मौखिक परम्पराओं से पद्मिनी की कहानी को चुना, और उसे अपने हिसाब से परिवर्तित और परिमार्जित किया।

जायसी ने पद्मावत के जन्म खण्ड में जिस अलौकिकता के साथ पद्मावती का जन्म दिखाया है वह ईश्वरीय घटना लगती है। पद्मावती के पैदा होते ही रात में दिन का प्रकाश हो गया। उसके सौन्दर्य के आगे चन्द्रमा की कला दो दिन के लिए लजाकर धरती में गड़ गई। पद्मावती के गन्ध से बेधा हुआ संसार महकने लगा। जायसी ने पद्मावती के जन्म की असाधारण घटना से मृत्यु की साधारण घटना तक उसकी अलौकिकता से लौकिकता की यात्रा कराई है। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने जायसी के इस भाव को पकड़ा है। वे लिखते हैं– पद्मावती असाधारण सुन्दरी है। उसकी सुन्दरता परमात्मा की कृपा और उनकी सृष्टि की पूर्णता का एक जीवन्त स्मारक है। लेकिन, फिरभी वह देवी नहीं है, बल्कि वह इस जगत की बेहद आकर्षक और कामकला- निपुण महिला है, वह एक समर्पित पत्नी है और कठिन परिस्थिति का सामना करने योग्य बुद्धिमान और साहसी है। इतना होने पर भी वह किसी 'सामान्य' महिला की तरह आचरण करते हुए 'दूसरी महिला' (यानि रतनसेन की पहली पत्नी - नागमती) के साथ ईर्ष्यापूर्ण तरीके से नोंक-झोंक और मारपीट तक कर सकती है।[8] भारतीय चिन्तन परम्परा में 'पद्मिनी' नाम आते ही उसे अप्रतिम सौन्दर्य का बोधक मान लिया जाता है। वास्तव में, भारतीय पुरुष ने स्त्री सौन्दर्य और आकर्षण के बारे में जो चरम कल्पना की, उसे

'पद्मिनी' नाम से सम्बोधित किया।"[9] यहां पद्मावती के अलौकिकता से लौकिकता की यात्रा का एक विशेष पड़ाव है जो भारतीय नारी होने की व्याख्या करता है।

सिंहल और पद्मिनी दोनों लोक धारणा से अधिक जायसी के काव्य कला की उपज है। जायसी ने कहानी भले ही लोक से ग्रहण की हो, किंतु उसे काव्य रूप में ढालने का काम उन्होंने ही किया। प्रत्येक कवि या साहित्यकार जब अपना नायक या नायिका स्थापित करता है तो उसे अपनी दृष्टि और साँचे में ढालकर पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है। इस संदर्भ में पुरुषोलम अग्रवाल ने ठीक ही लिखा है- "जायसी को अपने शब्दों में एक सिंहल की रचना करनी थी, जिसमें उनकी काव्य प्रतिभा की पद्मिनी ठीक से निवास कर सके।[10] जायसी को इतिहास, भूगोल और काव्यरूढ़ियों की सच्ची समझ थी। पद्मावत में चित्रित भौगोलिक यात्रा और काव्यरुढ़ि का जो चित्र उपस्थित हुआ है वह जायसी के परिज्ञान को पुष्ट करता है। "ओड़िशा तक सिंहलद्वीप की यात्रा 'वास्तविक' भूगोल के अनुसार होती है, लेकिन ओड़िशा के आगे की यात्रा मिथकीय और काल्पनिक समुद्रों और शानदार कल्पना लोक में होती है। सिंहल की पद्मिनी की अपनी कहानी के माध्यम से जायसी ने मानव प्रेम और कामेच्छा को दिव्यता में बदलने का आख्यान रचा है।[11]

हीरामन तोता पद्मावती का सच्चा मित्र है और रतनसेन का गुरु। वह विद्वान, दार्शनिक और उचित सलाहकार व पथ प्रदर्शक के रूप में हमारे सामने आता है। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने हीरामन को नायक का मार्गदर्शक व कवि का स्वर कहा है। हीरामन पद्मावती के सौन्दर्य का व्याख्याता है। वह प्रेम की गहराई से परिचित है। वह जब रत्नसेन के आगे पद्मावती के रूप सौंदर्य का वर्णन करता है तब रतनसेन प्रेम के वशीभूत हो जाता है। ऐसे में हीरामन राजा रतनसेन को समझते हुए कहता है–

"पेम सुनत मन भूलु न राजा। कठिन पेम सिर देई तो छाजा।।
पेम फाँद जो परा न छूटा। जीउ दीन्ह बहु फांद न टूटा॥[12]

अर्थात् हे राजा प्रेम की बात सुनकर मन को भुलावे में न डालो। प्रेम का मार्ग अत्यन्त दुष्कर है। प्रेम की बात वही कर सकता है जो अपने शीश के साथ शरीर न्योछावर करने का साहस रखता हो। जो प्रेम के फन्दे में एक बार पड़ जाता है वह छूटता नहीं।

यहां पर कवि वास्तविक प्रेम एवं महज आकर्षण के मध्य अन्तर को रेखांकित करती है। भारतीय लोक ज्ञान में तोते के प्रति जो कृतघ्नता का भाव है कवि उसे तोड़ता हुआ दिखता है। 'भारतीय काम परम्परा में, तोते की महत्वपूर्ण भूमिका है और यह प्रेम और कामेच्छा के स्वामी कामदेव का वाहन है।' पुरुषोत्तम अग्रवाल की यह उक्ति 'कामेच्छा के अन्वेषण' के काव्य को पुष्ट करती है। हीरामन द्वारा रतनसेन और पद्मावती का मिलन कराना, उसे दैवीय शक्ति (शिव और पार्वती) का आशीर्वाद प्राप्त होना न केवल प्रेम के मिलन की प्रमाणिकता सिद्ध करता है, बल्कि प्रेम के सात्विक भाव की परख भी करता है।

जायसी ने रतनसेन और अलाउद्दीन के प्रेम के अन्तर को दिखाया है। रतनसेन प्रेम की प्राप्ति के लिए योगी बन जाता है। वह हठ योगी कम प्रेमयोगी अधिक दिखाई देता है। गन्धर्वसेन द्वारा पकड़े जाने और सूली पर चढ़ाये जाने के समय तक भी वह अपने बल का प्रयोग नहीं करता बल्कि, एक सच्चे प्रेमी की तरह आत्म समर्पण कर देता है। उसके साथी सशस्त्र मुठभेड़ के लिए तैयार होते हैं लेकिन रतनसेन सबसे कहता है हम यहाँ युद्ध करने नहीं आए हैं। यदि प्रेम को बलपूर्वक जीतना सम्भव होता तो आखिर इतनी संख्या में सिद्ध पुरुषों ने अपना बलिदान क्यों दिया होता जायसी के रतनसेन और अलाउद्दीन के बीच का अन्तर यहीं स्पष्ट होताहै। पद्मावती के प्रेम और सहमति होने पर भी रतनसेन शस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहता, वहीं दूसरी ओर अलाउद्दीन को इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी। वह किसी भी कीमत पर पद्मावती को हासिल करना चाहता था, चाहे उसके लिए कपट का प्रयोग करना पड़े, या बर्बर बलप्रयोग का ।[13]

कामेच्छा के अपने अन्वेषण में जायसी ने अपने महाकाव्य में अलाउद्दीन को पुरुष कामेच्छा के एक विशिष्ट पहलू को प्रस्तुत करने हेतु चुना है। रतनसेन की तरह अलाउद्दीन भी पद्मिनी के अप्रतिम सौन्दर्य के बारे में सुनकर जुनूनी हो जाता है। अन्तर मात्र इतना है कि वह उसे कठोर बल प्रयोग द्वारा प्राप्त करना चाहता है। रतनमेन ने पद्मावती तक पहुंचने के लिए स्वयं को 'प्रेम योगी' के रूप में परिवर्तित कर लिया था तथा उसके प्रति निष्ठा और समर्थन साबित करने का हर सम्भव प्रयास किया था। उसे प्राप्त करने के पूर्व उसने उसका हृदय जीत लिया था; सती होने के लिए भी तैयार था, यहाँ तक कि सम्भावित मृत्युदण्ड का सामना करने को भी। अलाउद्दीन ने इस प्रकार का कोई कार्य नहीं किया था।[14]

'पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी' पुस्तक पांच अध्यायों में विभक्त है। 211 पृष्ठों की इस पुस्तक में पुरुषोत्तम अग्रवाल ने पद्मावत की जो उधेड़-बुन की है वह सुधी पाठकों को एक नई दृष्टि देती है। उन्होंने पद्मावत को सिर्फ कामेच्छा के अन्वेषण के रुप में ही नहीं, बल्कि उसके विभिन्न पहलुओं से हमें परिचित कराया है। पद्मावत के प्रति लेखक की जो अभीष्ट दृष्टि है उससे हम भली–भांति अवगत होते हैं। किंतु पुरुषोत्तम अग्रवाल द्वारा लिखित यह पुस्तक पाठक को एक नई दृष्टि देती है। पांचों अध्यायों में लेखक ने पद्मावत की अलग-अलग विषय वस्तु को उठाया है, किंतु लेखक का अभीष्ट कामेच्छा के अन्वेषण का ही रहा है।

संदर्भ सूची :

1. पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी-पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृष्ठ-11.
2. वहीं, पृष्ठ-211.
3. पद्मावत - मलिक मुहम्मद जायसी, व्याख्याकार श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण 2013, पृष्ठ-159.
4. पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी- पुरुषोत्तम अग्रवाल, पृष्ठ-53.
5. वही, पृष्ठ-61.
6. जायसी ग्रंथावली - सं0 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, प्रथम ज्ञानपीठ संस्करण 2011, पृष्ठ-47.
7. पद्मावत मानुस पेम भएउ बैकुंठी, पुरुषोत्तम अग्रवाल, पृष्ठ-15.
8. वही, पृष्ठ-70.
9. वही, पृष्ठ-81.
10. वही, पृष्ठ-84.
11. वही , पृष्ठ-82.
12. पदमावत-व्याख्याकार वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ठ-94.
13. पद्मावत मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी- पुरुषोत्तम अग्रवाल, पृष्ठ-129.
14. वही, पृष्ठ-153.

•